



वैदिक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र और राष्ट्रियता : एक समीक्षात्मक पर्यालोचना

डॉ. चन्द्रशेखर उपाध्याय,

सहकारी अध्यापक, संस्कृत विभाग,

भोलानाथ महाविद्यालय, धुबरी, असम

Email- chandrashekharu6@gmail.com

पत्रसार:

राष्ट्र ही जनसमुदाय के परिचय होता है। जैसे पानी मछलियों का आधार होता है, उसीप्रकार राष्ट्र ही हम सभी का आधार है। राष्ट्र सुरक्षित नहीं रहा तो हम भी सुरक्षित नहीं रहेंगे। इसलिए राष्ट्र सर्वोपरि होता है। राष्ट्र शब्द की परिभाषा 'Nation and Nationalism and Social Structure in Ancient India' में डॉ. शिव आचार्य कहते हैं - "A Rastra is such a geo - cultural territory of land having warrior protectors, awaken purohitas, conscious and well - organised society which are conducted by a powerful (spiritual) administration in which the people should have their cultural heritage, national and motherly feelings to that territory of land," (Nation Nationalism and Social Structure in Ancient India -p-17). 'वयं राष्ट्रे जागृत्यामः' (शुक्ल यजुर्वेद ९.२३) के अनुसार वैदिक काल में भी राष्ट्रियता का भावना अच्छी रूप से विराजमान था। राष्ट्रोत्पत्ति के अवधारणा को सुन्दर रूप से दर्शाते हुए वैदिक ऋषि कहते हैं - 'भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ततो राष्ट्रं बलमोजशय जातम् तदस्मै देवा उपसन्नमन्तु' (अथर्ववेद -१९/४१/१)। प्रस्तुत मन्त्र में राष्ट्रोत्पत्तिका इतिहास अथवा सिद्धान्त निहित हैं। फिर राष्ट्र की समृद्धि के लिए हमें कैसे रहना होगा इस पर विचार करते हुए वैदिक ऋषि कहते हैं - "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवा भागं यथा पूर्वं संजानानां उपासते ॥" अर्थात् हमें एक साथ एक मन, वाचामे समाहित होकर एक साथ चलना जरूरी है। वेद में स्वराज्य मानव का जन्मसिद्ध अधिकार माना गया है जिसको छिन लेनेका अधिकार न देवों के पास है न अन्य किसी शक्तिशाली को - "यस्य ते नू चिदादिषं, न मिनन्ति स्वराज्यम् न देवो नाधिगुर्जनः ॥" (ऋ ८.९३.११) इस प्रकार राष्ट्र के परिभाषा और राष्ट्र के प्रभुत्व और अखण्डता के लिए मार्गदर्शन वैदिक ऋषियों द्वारा किया गया है। इस शोध पत्र में वेदों में राष्ट्र इस भावना के उपर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है।

मूलशब्द : वेद, राष्ट्र, राष्ट्रियता, स्वराज्य, ऋत, अनृत।

सूचना :

भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही एकता और अखण्डता में ही प्रतिष्ठित है। राष्ट्रियता एवं अखण्डता ही भारतीय संस्कृति का सार्वकालिक संदेश है। यह भारतीय संस्कृति का स्तम्भ स्वरूप माने जाने वाले वैदिक वाङ्मय भी राष्ट्रिय एकता एवं विश्ववन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण है, जिसका प्रभाव भारतीय जनसमुदाय के चिन्तन मनन पर भी पड़ा है। न केवल भारतवर्ष अपि तु विदेशों में भी वैदिक वाङ्मय में प्रतिफलित एकात्मताकी आदर्श का प्रभाव पड़ा है। राष्ट्र हमारे लिए सर्वोपरि है। अगर राष्ट्र ही नहीं रहा तो हम कहा रहेंगे? इसलिए खुली हवा में स्वतन्त्र भाव से रहकर मूलभूत तथा अन्य सुविधाओं को भोग करते हुए अच्छी तरह से जीवन जीने हेतु हमें राष्ट्र चाहिए। अन्यथा हम पराधीनता के जङ्गीर में पड़े एवं सड़े हुए जिन्दगी भर रोते रहेंगे इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए राष्ट्र का अखण्डता अत्यन्त जरूरी है, इसके लिए हमें जाति-वर्ण-भाषा-धर्म-के सभी लोगों के साथ शान्तिपूर्ण सहावस्थान जरूरी है। आपस में एकता और भाईचारे से ही राष्ट्र का संरक्षण और संवर्धन सम्भव है।

'वयं राष्ट्रे जागृत्यामः' ११ इस के अनुसार वैदिक काल में भी राष्ट्रियता का भावना प्रबल रूप में विद्यमान था। अथर्ववेद में कहा गया है -

“भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो

दीक्षामुपनिषेदुरग्रे
ततो राष्ट्रं बलमोजशय जातम
तदस्मै देवा उपसन्नमन्तु ॥”२

अर्थात् कल्याण के कामना वाले, परलोक को भी जानने वाले ऋषियों ने पहले दीक्षा पूर्वक तप किया, उससे राष्ट्र बल और ओज की उत्पत्ति हुई, इसीलिए उसे देवगण भी समीप से नमन करें। यह मन्त्र में राष्ट्रोत्पत्ति का इतिहास व सिद्धान्त निहित है। और राष्ट्र का अधिपति ईश्वर होता है। ऋग्वेद में कहा गया है -

‘ऋतेन राजन् अनृतं विविञ्चन् मम राष्ट्रस्य अधिपत्यमेहि ।’३

अर्थात् हे राजा वरूण, ऋत से अनृत को छानते हुए मेरे राष्ट्र का अधिपत्य स्वीकारो। अथर्ववेद में कहा गया है-

“ऋतस्य पन्थामनु तिस्र आगुस्त्रयो धर्मा अनुरेत आगुः
प्रजामेका जिन्वन्त्युर्जमेका राष्ट्रमेका रक्षति देवयुनाम् ॥” ४

अर्थात् तीन देवता अर्थात् सूर्य-चन्द्र- और अग्नि ऋत के मार्ग में उसके पीछे पीछे चलते हैं, तीनों धर्मों के साथ रेत याने तेज और वीर्य को लिए चलते हैं, एक देवानुकूल याने सात्विक प्रजा को तुष्ट करती, एक तो उर्जा अर्थात् शक्ति और बल को देती हुई, एक राष्ट्र की रक्षा करती है, पुनः राष्ट्र को परमवैभव सम्पन्न बनाने के लिए, राष्ट्र के उत्थान के लिए तथा राष्ट्र के अखण्डता के लिए भी वैदिक ऋषियों ने सुन्दर वर्णन किए हैं। अथर्ववेद में ऋषियों कहते हैं -

“प्रान्त्यान्त्सपत्नान्त सहसा सहस्व
प्रत्यजातान् जातवेदो नुदस्व
इदं राष्ट्रं पिपृहि सौभगाय
विश्व एनमनुमदन्तु देवा ॥” ५

अर्थात् हे जातवेद, दुसरे शत्रुओं को अचानक दबोच लो, उत्पन्न होने जा रहे शत्रुओं को नष्ट करो, इस राष्ट्र को सौभाग्य के शिखर पर पहुँचाओ, विश्व के श्रेष्ठ जन इसका अनुमोदन करें। पुनः शुक्ल यजुर्वेद में कहा गया है -

“आ ब्रह्मण ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसि जायतामाराष्ट्रे राजन्यः
शूर इषत्योऽतिव्याधी महारथि जायतां दोग्ध्रीधेनुर्वोढा-
नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठा सभयो
युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् निकामे निकामे नः

पर्जन्यो वर्षतुए फ़लवत्योः न ओषधयः पाच्यन्ताम योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥”६

अर्थात् हे ब्रह्मन् हे प्रभो, समग्र राष्ट्र में ब्रह्मज्ञानी वेदज्ञ ब्राह्मण उत्पन्न हो, धनुर्धारी तीक्ष्ण शस्त्रों को निक्षेप कर सकने वाला महारथी और शूर क्षत्रिय उत्पन्न हो, दुधारू गौवे हो, भारवाही बैले हो, शीघ्रगामी घोड़े हो, कुशल नारियाँ हो, विजीगिषु और रथी सभा के योग्य युवावर्ग हो, इस यजमान के वीर सन्तान हो, प्रशासन में निपुण लोग हो, समय समय पर वर्षा हुआ करे, हमारे लिये फ़लयुक्त औषधियाँ पक्कर तैयार हो, हमारा अप्राप्य की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा करने की व्यवस्था करे।

अब राष्ट्र के अखण्डता के लिए हमें किस तरह रहना है, उसके उपर भी वेदों में सुन्दर वर्णन मीलता है। राष्ट्र का प्रभूत्व और अखण्डता निर्भर करता है उस राष्ट्र की नागरिकों के बीच एकता, भाईचारा, भातृत्वबोध और एकात्मकी भावना से। राष्ट्र के उत्थान के लिए हमारा सोच एक होना होगा, हमारा मन एक होना होगा इसीलिए वैदिक ऋषि कहते हैं -

“सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्
 देवा भागं यथा पूर्वं संजनाना उपासते ॥
 समानो मन्त्रः समिति समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्
 समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि
 समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
 समानमस्तु वो मनो यथा सुसहासति ॥” ७

इस तरह मिल जुलकर हिंसा, द्वेष, नफ़रत, से दुर रहते हुए जाति-धर्म-भाषा-वर्ण के लोगो में आपस में भाईचारे और प्रेम की भावना से ही राष्ट्र की समृद्धि हो सकती है। पारस्परिक राग, द्वेष, ईर्ष्या, आदिसे राष्ट्र खण्डित होता है। इसीलिए वैदिक ऋषियों द्वारा कहा गया है कि हमे आपस में भाई भाई जैसे रहना है और सदा सर्वदा जागृत रहे -

‘वयं राष्ट्रे जागृत्यामः पुरोहिताः ।’ ८ हमारे लिए अपनी मा जैसी है उसी प्रकार पृथिवी भी हमारी मा है। उसी वृहत पृथिवी के कोइ एक भूखण्ड मे हमारा राष्ट्र अवस्थित है। अतः वो पृथिवी ही है। इसीलिए अथर्ववेद मे कहा गया है - ‘माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या ।’ ९ अर्थात् पृथिवी हमारी मा है और हम सव उनकी सन्तान है। अतः सन्तान होकर मा की सर्वप्रकार से रक्षा करनी चाहिए। एवं हम सन्तान के बीच भी कोइ ज्येष्ठ अथवा कनिष्ठ, वरिष्ठ इत्यादि प्रकार के भावनाओं को त्याग कर एक होकर समानता से रहना है - ‘अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।’ १० अतएव राष्ट्र मे रहने वाले प्रत्येक मनुष्य परस्पर मे एक दुसरे को मित्रवत देखे एवं सम्पूर्ण प्राणियों मे समभाव रखे जिससे राष्ट्र मे एकता भाईचारा समभाव और सभी को जीने का आनन्द मिल सके। यजुर्वेद कहता है -

‘मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
 मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।
 मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥’ ११

किसी भी राष्ट्र के प्रतिष्ठा, उन्नति तथा सुरक्षा वहा के लोगो के हाथ में होता है। उनका आचरण ही राष्ट्र के अस्तित्व का निर्धारक होता है। उनकी कार्य क्षमता, कौशल, निपुणता, त्याग आदि राष्ट्र के धरोहर है। इसी प्रसंग मे अथर्ववेद का एक मन्त्र उच्चारण किया जा सकता है -

‘यां रक्षन्त्यस्वपना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवी प्रमादम् ।
 सा नो मधु प्रियं दुहामथो अक्षतु वर्चसा ॥’ १२

अर्थात् निन्द्रा, तन्द्रा, आलस्य, अज्ञान आदि दुर्गोणो मे रहित देवगण जिस विशाल भूमि की प्रमाद रहित होकर रक्षा करते है, वह मातृभूमि पदार्थो से हमे सुसम्पन्न करे तथा हमे ज्ञान, वर्चस और ऐश्वर्य प्रदान करे। इस तरह हमे भी निन्द्रा, तन्द्रा, आलस्य आदि दुर्गोणो से रहित होकर राष्ट्र के विकाश मे योगदान करनी चाहिए।

राष्ट्र के प्रति हमारे भावबोध एवं कर्तव्यबोध के वारेमे वात करते हुए निम्नोक्त मन्त्र कितना व्यवहारिक है यह सहज ही स्पष्ट होता है। आज राष्ट्र और राष्ट्रवाद के नाम पर जो वल प्रयोग की भावना तथा तिरस्कार की भावना जनसमूदाय पर छा रहा रहा है इस सन्दर्भ मे अथर्ववेद के यह मन्त्र बहुत ही प्रासङ्गिक है -

‘यद् वदामि मधुमत् तद् वदामि यदीक्षे तद् नन्ति मा ।
 त्विषीमानास्मि जूति मानवान्यान् हन्मि दोधतः ॥’ १३

अतः हम अपने राष्ट्र के विषय मे जो भी उच्चारित करे वह हितकर और मधुरता से युक्त हो, जो देखे वह सव हमारे लिए प्रिय हो, दुसरे के प्रति भी अच्छी भावना से युक्त होना है। पड़ोस के राष्ट्र के प्रति भी हमे सहनशील होना जरूरी है। यही सहिष्णुता, सहृदयता हमे भी सुख चैन से जीवन यापन करने मे मदद

करेगा और दुसरो को भी । मुलतः विश्वन्धुत्व स्थापन करना जरूरी है ।

वैदिक ऋषिगण राष्ट्र के प्रति इतनी जागरूक थे की उनकी नजर मे राष्ट्र ही सर्वोपरि था । अगर राष्ट्र नहीं तो कुछ भी नहीं । इसिलिये वैवाहिक संस्कार मे भी बर और बधु को राष्ट्रीयता का ज्ञान अथवा उपदेश दिया जाता था । अथर्ववेद में कहा गया है -

“अभिवर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम् ।
रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनुपक्षितौ ॥”१४

अर्थात् ये दोनो वर , बधु दुध आदि से वृद्धि को प्राप्त हो , राष्ट्रत्व से भी ये आगे वड़े , अपरिमित तेजस्वी धन से पूर्णकाम रहे ।

इस तरह से वैदिक वाङ्मय में सुन्दर रूप से राष्ट्र का विवेचन ,उत्पत्ति, अखण्डता,प्रभूत्व,विकास और समृद्धिके वारे मे अति सुन्दर रूप से वर्णन किया गया है । राष्ट्र हमारा आधार है । राष्ट्र विना हम वेधर हो जायेंगे , पराधीन जीवन जीना पड़ता है जो दुखद है ,इसिलिये अपनि जान जैसे प्यारी है यह धरती माता जहा हम स्थित है । इसिलिए राष्ट्र हित मे हमे सदा समर्पण होना चाहिए इति अलम् अति विस्तरेण ।

सन्दर्भ सूची :

- ३.अथर्ववेद , १२.१.७
- ४.अथर्ववेद, १२.१.१२
- ५.ऋग्वेद,१०.१२४.४
- ६.ऋग्वेद, १०.१९१.२-४
- ७.ऋग्वेद, ५.६०.५
- ८.शुक्लयजुर्वेद , ३६.१८
- ९.शुक्लयजुर्वेद , ९.२३
- १०.शुक्लयजुर्वेद,२२.२२
- ११.यजुर्वेद , ९.२३
- १२.वही , १२.१.५८
१३. वही , ६.७८. ८
१४. वही,७.३५.१

ग्रन्थपञ्जी :

१. अथर्ववेद, डा. गंगा सहाय शर्मा, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१५
२. ऋग्वेद , डा. गंगा सहाय शर्मा, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१६
३. शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनीयसंहिता, याज्ञिकसम्राट पण्डित वैणीरामशर्मा गौड, चौखम्भा ओरियन्टालिया (दिल्ली), १९९१
४. यजुर्वेद, डा. रेखा व्यास, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, २०१५